# IJARETY

## International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY (IJARETY)

**Volume 11, Issue 4, July-August 2024**

**Impact Factor: 7.394**

INTERNATIONAL STANDARD SERIAL NUMBER INDIA

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com

International Journal of Advanced Research in Education and TechnologY(IJARETY)

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 4, July-August 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1104068

# भारत में राष्ट्रवाद का उद्भव एवं विकास

**Dr. Agni dev**

Associate professor, Department of Political Science, Babu shobha Ram Govt. Arts College Alwar (Rajasthan), India

**शोध सार:** भारत में राष्ट्रवाद का उद्भव एक क्रमिक एवं ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है, जिसमें सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक तत्वों ने सम्मिलित रूप से भूमिका निभाई। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अंग्रेजी शिक्षा, सामाजिक सुधार आंदोलनों, संचार माध्यमों के विकास तथा भारत की राजनीतिक चेतना के प्रसार ने राष्ट्रवाद को आधार प्रदान किया। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना (1885) ने राष्ट्रवाद को संगठित रूप दिया तथा स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों में यह आंदोलन औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध जनशक्ति का स्वरूप बन गया। महात्मा गांधी के नेतृत्व में राष्ट्रवाद जन-आंदोलन के रूप में उभरा और पूरे देश में एकता, स्वराज और आत्मसम्मान की भावना प्रबल हुई। यह शोध स्पष्ट करता है कि भारतीय राष्ट्रवाद एक समन्वित, समतामूलक एवं जनवादी विचारधारा है, जिसने भारत को स्वतंत्रता के मार्ग पर अग्रसर किया और स्वतंत्रता पश्चात भी राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण प्रेरक शक्ति बनी हुई है।

**मूल शब्द:** भारतीय राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय चेतना, स्वतंत्रता संग्राम, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, सामाजिक सुधार, महात्मा गांधी, विदेशी शासन, स्वराज, एकता, जन-आंदोलन

## I. पृष्ठभूमि

राष्ट्रवाद एक समन्वित भावना है। जिसमें राष्ट्र का प्रत्येक नागरीक अपने सभी भेद-भाव को भुलाकर एक सूत्र में बंध जाता है एवं राष्ट्र के विकास हेतु तत्पर रहता है। आपदा काल में अपना सर्वस्व न्योछावर करने हेतु तैयार रहता है। अन्य सामाजिक तथ्यो की तरह राष्ट्रवाद भी ऐतिहासिक तथ्य है। लोक जीवन के विकास क्रम में वस्तुनिष्ठ और भावनिष्ठ दोनों प्रकार के ऐतिहासिक तत्वो की परिपक्वता के पश्चात् राष्ट्रवाद का उद्भव हुआ। जैसा ई० एच० कार ने लिखा है, 'सही अर्थों में राष्ट्रो का उदय मध्ययुग की समाप्ति पर ही हुआ। व्यापक राष्ट्रीयता के आधार पर समाज राज्य और संस्कृति के उद्भव के पूर्व संसार के विभिन्न भागो का जन-जीवन मौटे तौर पर इन स्थितियों से गुजराः कबीलो की जिन्दगी, दास प्रथा, सामंतवाद। सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक विकास के खास दौर में राष्ट्रो का जन्म हुआ।

ई० एच० कार द्वारा दी गई राष्ट्र की परिभाषा के अनुसार..... राष्ट्र समुह का बोध होता है, उसके लक्षण है-
1. अतीत और वर्तमान में वास्तविकता अथवा भविष्य के लिए आकांक्षा के रूप में सर्वनिष्ठ सरकार की धारणा
2. अपना अलग विशिष्ट आकार और सदस्यों की पारस्परिक संपर्व्यसामीव्यः
3. न्यूनाधिक निर्धारित भू-भाग
4. ऐसी चरित्रगत विशेषताएँ (भाषा इनमें सर्वाधिक बहुल है) जो किसी राष्ट्र को अन्य राष्ट्रों और अराष्ट्रिक समुदायों से अलग करती है।
5. सदस्यो के सम्मिलित स्वार्थः
6. सदस्यों के मन में राष्ट्र की जो छवि है उससे संबंधित समवेत भाव या इच्छाशक्ति।

राष्ट्र ही आज का युग सत्य है, और राष्ट्रीयता मानवमात्र की मूल भावना। विज्ञान और औद्योगिकी जैसे वस्तुनिष्ठ शास्त्रों के परे अर्थ, राजनीति और संस्कृति के अन्यान्य क्षेत्रें में जो आंदोलन हुए है वे सजग राष्ट्रीयता की भावना से ही उत्प्रेरित हुए है, चाहे इन आंदोलनो का संगठन राष्ट्रों ने अपनी स्वतंत्रता और संस्कृति की रक्षा और पुष्टि के लिए किया हो. या दूसरे राष्ट्रों की स्वतंत्रता और संस्कृति के अपहरण के लिए। समाजवादी या पूंजीवादी आधार पर मानवता के एकीकरण और सारे संसार के नवनिर्माण आदि के आधुनिक कार्यक्रमों के लिए भी राष्ट्रों को ही सर्वप्रधान इकाई माना गया है।

मानवजीवन में राष्ट्रवाद की भूमिका के निर्णायक महत्व के कारण संसार के कुछ सर्वश्रेष्ठ चिन्तकों ने पिछले कई वर्षों से राष्ट्रवाद को अपने अन्वेषण और अध्ययन का विशिष्ट क्षेत्र बनाया है। राष्ट्रवाद पर लिखा गया अभिनव साहित्य राष्ट्रों के रूप निरूपण की जटिल बहुविध प्रक्रिया, उनके लक्षण, संघर्ष और आत्माभिव्यक्ति की रीति आदि विभिन्न विषयों पर प्रचुर प्रकाश डालता है। प्रत्येक देश में राष्ट्रवाद का अपना विशिष्ट, अनन्य रूप है। अतः किसी भी देश की राष्ट्रीयता का अध्ययन अपने आप में पृथक कार्य है।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 4, July-August 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1104068

## II. भारतीय राष्ट्रवाद का विकास

भारतीय राष्ट्रवाद अर्वाचीन तथ्य है। ब्रिटिश शासन और विश्व शक्तियों के कारण तथा भारतीय समाज में उत्पन्न और विकसित अनेक भावनिष्ठ एवं वस्तुनिष्ठ कारको की क्रिया-प्रतिक्रिया के लस्वरूप ब्रिटिश काल में राष्ट्रवाद का जन्म हुआ।

राष्ट्रवाद के सामान्य अध्ययन की दृष्टि से भारतीय राष्ट्रवाद का आविर्भाव और उत्थान का अपना विशिष्ट स्थान है। भारत में राष्ट्रीयता का विकास की प्रक्रिया बड़ी जटिल और बहुअंगी है। उसके अनेक कारण है। अंग्रेजों के आगमन के पूर्व भारत की सामाजिक संरचना कई अर्थों में अद्वितीय थी। यहाँ की अर्थव्यवस्था का आधार यूरोपीय देशों के मध्ययुगीन प्राक् पूँजीवादी समाजों से भिन्न था। भारत विभिन्न भाषाओं धर्मों एवं बड़ी आबादी वाला बहुत बड़ा देश है। आबादी का लगभग दो-तिहाई भाग हिन्दू है और हिन्दू समाज विभिन्न जातियों उपजातियों में विभक्त है।

भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की पृष्ठभूमि की यह खासियत है कि विशेषतः हिन्दू समाज और सामान्यतः सारा भारतीय समाज खंडित और विभाजित रहा है, किसी भी अन्य देशो में राष्ट्रवाद का उदय ऐसी नितांत शक्तिशाली परपंराओं और संस्थाओं के संदर्भमें नहीं हुआ। विभिन्न सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संरचना एवं धार्मिक परंपरा, अत्यंत विस्तृत भूभाग, बढ़ती हुई जनसंख्या, इन कारणो से भारतीय राष्ट्रवाद का उद्भव एवं उत्थानों का अध्ययन कती कष्टसाध्य है, लेकिन इसीलिए रोचक एवं उपयोगी भी। संसार के किसी भी अन्य देश की अपेक्षा भारत में भूतकालीन सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संरचना की आत्म-रक्षात्मक इच्छाशक्ति अधिक प्रबल रही है। भारत के राष्ट्रीय आंदोलन का महत्व मानव इतिहास के वर्तमान और भविष्य के लिए यों ही बहुत अधिक है। राष्ट्रीयता का आंदोलन मानव समाज के बहुत बड़े अंश का आंदोलन है और दिन-प्रतिदिन अधिक गतिशील और गत्यात्मक होता जा रहा है।

भारतीय राष्ट्रवाद के बारे में एक अन्य रोचक तथ्य है कि इसका अविर्भाव राजनीतिक पराधीनता के दिनो में हुआ। पूर्ववर्ती राष्ट्र ब्रिटेन ने अपने स्वयं के हित में भारतीय समाज के आर्थिक ढाँचे का आमूल परिवर्तन किया, केन्द्रीयभूत राज्य व्यवस्था की स्थापना की, आधुनिक शिक्षा पद्धित की नीव डाली, आवागमन के नए साधन और ऐसी अन्य संस्थाओं का निर्माण किया। इसके फलस्वरूप नए सामाजिक वगों का जन्म हुआ और अपने आप में अद्वितीय नई सामाजिक शक्तियो की उन्मोचन संभव हो सका।

ये नए सामाजिक तत्व अपनी अपरिहार्य प्रकृति के कारण ब्रिटिश साम्राज्यवाद से टकराए और भारतीय राष्ट्रवाद के विकास की आधारशिला ही नहीं बल्कि उसके लिए प्रेरणा स्त्रोत भी सिद्ध हुए। इस तरह भारतीय राष्ट्रवाद जटिल और विशिष्ट सामाजिक पृष्ठभूमि में जन्मा और आगे बढ़ रहा है।

प्रस्तुत लेख इस सामाजिक संदर्भ की निर्माण करने वाले विभिन्न तथ्यो की भूमिका को समझने और उनका मूल्यांकन करने एवं राष्ट्रवाद के उत्थान की प्रक्रिया को अभिचित्रित करने का प्रयासमात्र है।

## III. राष्ट्रीय भावना का अभाव

जागरणशील सामाजिक वर्गों और राष्ट्रीय उपजातियो की संस्कृतियों से आधुनिक भारतीय राष्ट्र बना है। यह राष्ट्रीय संस्कृति इन दलों के और भारतीय राष्ट्र की संपूर्णता के मुक्त विकास की आवश्यकताओं को प्रतिच्छवित करती है। स्पष्टतः ऐसी संस्कृति प्राक् ब्रिटिश भारत में नहीं पैदा हो सकती थी, क्योंकि उस वक्त अपने विभिन्न एवं विशिष्ट अवयवों सहित एक संयुक्त राष्ट्र का जन्म नहीं हुआ था। सामंती और वणिक वर्गों की सम्पन्न संशलिष्ट और व्यापक संस्कृति और जनसाधारण की संस्कृति जो लोककला, परिकथा एवं धार्मिक अनुष्ठानों आयोजनों के रूप में प्रलुटित हुई, पाक् ब्रिटिश भारतीय समाज की इस द्वैत संस्कृति में राष्ट्रीय विस्तार एवं रूप की अभाव था।

सामाजिक पृष्ठभूमि

भारतीय राष्ट्रवाद को समझने के लिए उसकी सामाजिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है। भारत में अंग्रेजों के आने से पहले भारतीय ग्राम आत्मनिर्भर समुदाय थे। ब्रिटिश पूर्व भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था कृषि और कुटीर उद्योगो पर आधारित थी, और सदियो से ज्यों-की-त्यों चली आ रही थी। कृषि और उद्योग में तकनीकी स्तर अत्यन्त निम्न था। सामाजिक क्षेत्र में परिवार, जाति पंचायत और ग्रामीण पंचायत सामाजिक नियंत्रण का कार्य करती थी। नगरीय क्षेत्र में कुछ नगर राजनैतिक, कुछ धार्मिक तथा कुछ व्यापार की दृष्टि से महत्वपूर्ण थी।

अधिकतर राज्यों की राजधानी किसी न किसी नगर में थी। नगरो में अधिकतर लघु उद्योग प्रचलित थे। इन उद्योगो को राजकीय सहायता प्राप्त होती थी। अधिकतर गाँवो और नगरो में परस्पर सांस्कृतिक आदान-प्रदान बहुत कम होता था, क्योंकि यातायात एवं संदेशवाहन के साधन बहुत कम विकसित थे। इस प्रकार राजनैतिक परिवत्तनों से ग्राम की सामाजिक स्थिति पर बहुत कम प्रभाव पड़ता था। विभिन्न ग्रामो और नगरो के एक-दूसरे से अलग रहने के कारण देश में कभी अखिल भारतीय राष्ट्र की भावना उत्पन्न नहीं हो सकी। भारत में

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 4, July-August 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1104068

जो भी राष्ट्रीयता की भावना थी, वह अधिकतर धार्मिक और आदर्शवादी एकता की भावना थी, वह राजनैतिक व आर्थिक एकता की भावना नहीं थी। लोग तीर्थयात्रा करने के लिए पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण भारत का दौरा अवश्य करते थे और इससे देश की धार्मिक एकता की भावना बनी हुई थी, किन्तु सम्पूर्ण देश परस्पर संघर्षरत छोटे-छोटे राज्यो में बटाँ हुआ था, जिनमें बराबर युद्ध होते रहते थे। दूसरी ओर ग्रामीण समाज इन राजनैतिक परिवत्तनों से लगभग अछूते रहते थे। भारतीय संस्कृति मुख्य रूप से धार्मिक रही है। इसमें राजनैतिक तथा आर्थिक मूल्यों को कभी इतना महत्व नहीं दिया गया, जितना कि आधुनिक संस्कृति में दिया जाता है। भारतीय संस्कृति की एकता भी धार्मिक आदर्शवादी एकता है। उसमें राष्ट्रीय भावना का अधिकतर अभाव ही दिखलाई देता है।

राष्ट्रवाद के उदय की प्रक्रिया अत्यन्त जटिल और बहुमुखी रही है। भारत में अंग्रेजो के आने से पहले देश में ऐसी सामाजिक संरचना थी जो कि संसार के किसी भी अन्य देशो में शायद ही कही पाई जाती हो। वह पूर्व मध्यकालीन यूरोपीय समाजो से आर्थिक दृष्टि से भिन्न थी। भारत विविध भाषा भाषी और अनेक धर्मो के अनुयायियों वाले विशाल जनसंख्या का देश है। सामाजिक दृष्टि से हिन्दू समाज जो कि देश की जनसंख्या का सबसे बड़ा भाग है, विभिन्न जातियो और उपजातियो में विभाजित रहा। स्वयं हिन्दू धर्म में किसी विशिष्ट पूजा पद्धित का नाम नहीं है। बल्कि उसमें कितने ही प्रकार का दर्शन और पूजा पद्धतिया सम्मिलित हैं।

इस प्रकार हिन्दू समाज अनेक सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक संरचना तथा विशाल आकार के कारण यहाँ पर राष्ट्रीयता का उदय अन्य देशो की तुलना में अधिक कठिनाई से हुआ है। शायद ही विश्व के किसी अन्य देश में इस प्रकार की प्रकट भूमि में राष्ट्रवाद का उदय हुआ हो।

उपरोक्त विचारो से यह स्पष्ट होता है कि भारत में राष्ट्रवाद का उदय और विकास उन परिस्थितियो में हुआ जो राष्ट्रवाद के मार्ग में सहायता प्रदान करने के स्थान पर बाधाएँ पैदा करती है। वास्तविकता यह है कि भारत समाज की विभिन्नताओं में मौलिक एकता सदैव विद्यमान रही है, और समय-समय पर राजनीतिक एकता की भावना भी उदय होती रही है। वी) ए० स्मिथ के शब्दो में वास्तव में भारतवर्ष की एकता उसकी विभिन्नताओं में ही निहित है। ह्र ब्रिटिश शासन की स्थापना से भारतीय समाज में नये विचारो तथा नई व्यवस्थाओं को जन्म मिला है इन विचारो तथा व्यवस्थाओं के बीच हुई क्रियाओं और प्रतिक्रियाओं के परिणामस्वरूप भारत में राष्ट्रीय विचारो का जन्म हुआ।

भारत में अंग्रेजों की विजय के पश्चात् भारतीय समाज में व्यापक रूपान्तरण हुआ। ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना का कारण मुगल साम्राज्य का पतन और देश का अनेक छोटे-छोटे राज्य में विभाजित हो जाना था। ब्रिटिश शासन पूर्व मुस्लिम शासनो से अनेक बातो में भिन्न था।

भारतीय लोगो की तुलना में अंग्रेजों की राष्ट्रीयता की भावना अनुशासन देशभक्ति और सहयोग कहीं अधिक दिखाई पड़ते थे। उनके इन गुणो ने भारतीय विशिष्ट वर्ग को भी प्रभावित किया। अंग्रेजी शासन के भारत की आर्थिक संरचना पर दूरगामी प्रभाव पड़े। उससे एक और देश में प्राचीन एशियाई समाज को आघात पहुंचा और दूसरी ओर देश में पाश्चात्य समाज की स्थापना हुई। इससे देश में राजनैतिक एकता का निर्माण हुआ। उससे देश की कृषि व्यवस्था में आमूल चूर्ण परिवर्तन हुआ। अंग्रेजो के आने से पहले भूमि राजा की नहीं समझी जाती थी। उसे जोतनेवाले राजा को कर दिया करते थे. अस्तु भूमि निजी सम्पत्ति भी नहीं मानी जाती थी। अंग्रेजो के आने से भूमि पर ग्रामीण समुदाय का अधिकार नहीं रहा, बल्कि वह व्यक्तियों की निजी सम्पत्ति बन गई। इस प्रकार देश के कुछ भागो में जमींदारों और अन्य भागों में किसानों का भूमि पर अधिकार हो गया। लार्ड कार्नवालिस के राज्यकाल में, बंगाल, बिहार और उड़ीसा में जमींदार वर्ग का उदय हुआ। देश की आर्थिक दशा बिगड़ने लगी, गरीबी बढ़ने लगी। भू-दासों के एक नवीन वर्ग का निर्माण हुआ जिसके हित भू-स्वामियो के हित के विरूद्ध थें कृषि के क्षेत्र में एक ओर सर्वहारा भू-दास और दूसरी ओर परोपजीवी जमींदार वर्ग का निर्माण हुआ जिनमें परस्पर संघर्ष और तनाव बढ़ने लगे। इन वर्गों के निर्माण से व्यापक, सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक परिवर्तन हुए।

## IV. राष्ट्रवाद के विकास में शिक्षा का योगदान

अंग्रेजी शिक्षा के प्रसार से जहाँ एक ओर भारतीय अंग्रेजो का एक वर्ग बढ़ा जो कि केवल जन्म से भारतीय और सब प्रकार से अंग्रेज थे, वही दूसरी ओर ऐसे पढ़े-लिखे वर्ग का भी निर्माण हुआ जो कि देश में राष्ट्रीय आंदोलन का सूत्रपात किया। भारत में अंग्रेजी शिक्षा प्रणाली की चाहे जो भी आलोचना की जाए परन्तु यह निश्चित है कि उससे देश में राष्ट्रीय आंदोलन का सूत्र्यात हुआ। इससे राष्ट्रीयता जनतंत्र्वाद और समाजवाद की लहर उन्यन्न हुई।

अंग्रेजो के शासनकाल में सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था तथा नवीन प्रशासनिक प्रणाली और नई शिक्षा के विस्तार से नए वर्गों का उदय हुआ। ये वर्ग प्राचीन भारतीय समाज में नहीं पाये जाते थे। ये अंग्रेजी शासनकाल में पूँजीवादी व्यवस्था से उत्पन्न हुए। किन्तु देश

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 4, July-August 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1104068

के विभिन्न भागो में इन नए वर्गों का एक ही प्रकार से उदय नहीं हुआ। इसका कारण यह था कि देश के विभिन्न भागो में एक ही साथ अंग्रेजी शासन की स्थापना नहीं हुई। सबसे पहले बंगाल में अंग्रेजी शासन की स्थापना हुई और वही से पहले जमीदार वर्ग का उदय हुआ। इसी प्रकार बंगाल तथा बम्बई में सबसे पहले बड़े उद्योगो की स्थापना की गई ओर वहाँ पर उद्योगो की स्थापना की गई और वहाँ पर उद्योगपतियो और श्रमिको के वर्गों का उदय हुआ, अन्त में जब सम्पूर्ण देश में अंग्रेजी शासन की स्थापना हुई तो सब जगह राष्ट्रीय स्तर पर नए सामाजिक वर्ग दिखलाई पड़ने लगे। इन नए वर्गों के निर्माण में पूर्व ब्रिटिश सामाजिक व आर्थिक संरचना का महत्वपूर्ण योगदान था। उदाहरण के लिए अंग्रेजो के आने के पहले बनियों में व्यापार और उद्योग अधिक था और अंग्रेजो शासनकाल में भी इन्हीं लोगों ने सबसे पहले पूँजीपति वर्ग का निर्माण किया, हिन्दुओं की तुलना में मुस्लिम जनसंख्या में शिक्षा का प्रसार कम होने के कारण उनमें बुद्धिजीवी, मध्यमवर्ग और बुर्जुआ वर्ग हिन्दू समुदायो की तुलना में बहुत बाद में दिखलाई दिया। इस प्रकार अंग्रेजी शासनकाल में जमीदार वर्ग, भूमि जोतने वाले, भूस्वामी वर्ग कृषि श्रमिक, व्यापारी वर्ग और विभिन्न कारखानों और बगीचा में काम करेनवाला श्रमिक वर्ग का उदय हुआ। इनमें से अनेक वर्गों के हित परस्पर विरूद्ध थे और उन्होने अपने-अपने हितो की रक्षा करने के लिए अनेक नवीन आंदोलन का सूत्रपात किये।

## v. निष्कर्ष

राष्ट्रवाद एक प्रासंगिक विचारधारा है जो राष्ट्र में गति उत्पन्न करती है, जब कभी भी राष्ट्र में विपरीत परिस्थितियाँ उत्पन्न होती है, तो राष्ट्रवाद एक संजीवनी की तरह उसे प्रभावी करता है। हमारा समाज जहाँ से राष्ट्रवाद की प्रथम सोपान आरंभ होता है उसमें कालक्रम के अनुसार परिवर्तन होते रहते है लेकिन जो मूल तत्व राष्ट्रवाद का है वह उसी रूप में मौजूद रहता है। भारतीय समाज अपने परिवर्तनशील विशेषता के आधार पर समय-समय पर इसे सिद्ध करता रहा है। चाहे वह 19वी सदी का भारतीय समाज हो या 21 वी सदी की भारतीय समाज हो राष्ट्रवाद का स्वरूप वही है। जैसे पुलवामा दुर्घटना के बाद भारतीय नागरीको ने जिस प्रकार से एक होकर सरकार पर दबाव बनाया वह इसे स्पष्ट करता है।

भारत में राष्ट्रवाद का विकास केवल राजनीतिक आंदोलन का इतिहास नहीं, बल्कि सांस्कृतिक जागरण, सामाजिक पुनर्गठन एवं जनसामान्य की चेतना के उदय का परिणाम है। राष्ट्रवाद ने भारत के विविध समुदायों को एक समान लक्ष्य- स्वतंत्रता के लिए एकजुट किया। गांधी, नेहरू, पटेल, बोस और अन्य नेताओं के नेतृत्व में राष्ट्रवाद जन-आंदोलन बन गया, जिसने ब्रिटिश शासन की आधारशिला को हिला दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात राष्ट्रवाद राष्ट्र-निर्माण की मूल प्रेरक शक्ति बना, जिसने लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समता और अखंडता को भारत के संवैधानिक ढाँचे में सुनिश्चित किया। आज भी राष्ट्रवाद भारत को नई चुनौतियों- सामाजिक सामंजस्य, विकास, सुरक्षा और वैश्विक प्रतिस्पर्धा का सामना करने में एक नैतिक और भावनात्मक आधार प्रदान करता है।

अतः भारतीय राष्ट्रवाद एक जीवंत एवं गतिशील विचारधारा है, जिसने भारत को औपनिवेशिक दासता से मुक्त कर स्वतंत्र एवं अखण्ड राष्ट्र के रूप में स्थापित किया। यह केवल ऐतिहासिक उपलब्धि नहीं बल्कि भारत के भविष्य का मार्गदर्शक भी है, जो राष्ट्रीय एकता, आत्मसम्मान एवं सतत प्रगति की दिशा में ऊर्जा प्रदान करता है।

## संदर्भ सूची

1. अग्रवाल, जे.सी. (2006). भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
2. आहूजा, राम (2008). भारतीय समाज और राष्ट्रवाद. रावत पब्लिकेशन, जयपुर।
3. झा, हेमचन्द्र (2010). भारतीय राष्ट्रवाद का विकास. प्रकाशन संस्थान, दिल्ली।
4. शुक्ल, वी.एन. (2015). भारतीय संविधान और राष्ट्रवाद. ईस्टर्न बुक कम्पनी, लखनऊ।
5. शर्मा, बी.के. (2009). भारतीय राजनीति का विकास. विश्वविद्यालय प्रकाशन, जयपुर।
6. गुप्ता, एस.पी. (2011). भारत का राष्ट्रीय आंदोलन. नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
7. त्रिपाठी, रामशंकर (2005). भारतीय राष्ट्रवाद का इतिहास. लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद।
8. पंत, कृष्णचंद्र (2012). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और राष्ट्रवाद. प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली।
9. सिन्हा, रमेश (2014). स्वतंत्रता आंदोलन में जनसहभागिता. कॉमनवेल्थ पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
10. आचार्य, रामजी (2013). भारतीय राष्ट्रीय चेतना का विकास. अटलांटिक पब्लिशर्स, दिल्ली।
11. घोष, शशिभूषण (2007). भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का इतिहास. मोतीलाल बुक डिपो, नई दिल्ली।
12. शर्मा, रतनलाल (2016). भारत में राष्ट्रवाद और गांधीवाद. ज्ञान गंगा, गाजियाबाद।
13. श्रीवास्तव, सुधा (2008). स्त्री एवं राष्ट्रवाद. राजस्थान पत्रिका प्रकाशन, जयपुर।
14. सिंह, विजय (2017). क्रांतिकारी आंदोलन और राष्ट्रवाद. अयाची प्रकाशन, पटना।

| ISSN: 2394-2975 | www.ijarety.in| | Impact Factor: 7.394| A Bi-Monthly, Double-Blind Peer Reviewed & Referred Journal |

|| Volume 11, Issue 4, July-August 2024 ||

DOI:10.15680/IJARETY.2024.1104068

15. जोशी, नरेन्द्र (2011). सांस्कृतिक राष्ट्रवाद के स्रोत. भारतीय विद्या भवन, मुंबई।
16. दास, सूर्यकांत (2010). भारतीय जनआंदोलन और स्वतंत्रता संग्राम. नया प्रकाशन, कोलकाता।
17. मिश्रा, अनिल (2009). नेहरू का राष्ट्रवादी दृष्टिकोण. आलोक प्रकाशन, दिल्ली।
18. गोस्वामी, ममता (2015). भारतीय राष्ट्रवाद में महिलाएँ. राज प्रकाशन, जयपुर।
19. मेहता, चेतन (2012). स्वाधीनता संग्राम के नायक और राष्ट्रवाद. आशिष पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली।
20. कौल, हरिन्द्र (2013). राष्ट्रीय आंदोलन का समाजशास्त्र. यूनिवर्सिटी प्रेस, वाराणसी।
21. त्यागी, धर्मपाल (2018). भारत की राष्ट्रीय एकता और अखंडता. जनमित्र प्रकाशन, दिल्ली।
22. सिंह, हरीश (2019). भारतीय राष्ट्रवाद : अवधारणा और विकास. शिक्षा निकेतन, जयपुर।
23. राठौड़, चंद्रकांत (2020). भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन : स्वदेशी से स्वराज तक. शिक्षा प्रकाशन, लखनऊ।
24. पटेल, अश्विनी (2017). भारतीय राष्ट्रवाद में युवा शक्ति की भूमिका. दीपशिखा प्रकाशन, भोपाल।
25. कुमारी, रेखा (2021). स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रवाद और राष्ट्र-निर्माण. राजहंस पब्लिशर्स, दिल्ली।

IJARETY

INNO SPACE
SJIF Scientific Journal Impact Factor

doi crossref

निस्केयर NISCAIR

International Journal of Advanced Research in Education and Technology

ISSN: 2394-2975 Impact Factor: 7.394

www.ijarety.in editor.ijarety@gmail.com